


सलोकु ॥  
करण कारण प्रभु एकु है  
दूसर नाही कोइ ॥  
नानक तिसु बलिहारणै  
जलि थलि महीअलि सोइ ॥११॥





असटपदी ॥

करन करावन करनै जोगु ॥

जो तिसु भावै सोई होगु ॥

खिन महि थापि उथापनहारा ॥

अंतु नही किछु पारावारा ॥

हुकमे धारि अधर रहावै ॥


हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥


हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥

हुकमे अनिक रंग परकार ॥


करि करि देखै अपनी वडिआई ॥


नानक सभ महि रहिआ समाई ॥१॥







प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥  
प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥  
प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥  
प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥  
प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥  
आपि करै आपन बीचारै ॥  
दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥  
खेलै बिगसै अंतरजामी ॥  
जो भावै सो कार करावै ॥  
नानक द्रिसटी अवरु न आवै ॥२॥





कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥  
जो तिसु भावै सोई करावै ॥  
इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥  
जो तिसु भावै सोई करेइ ॥  
अनजानत बिखिआ महि रचै ॥  
जे जानत आपन आप बचै ॥  
भरमे भूला दह दिसि धावै ॥  
निमख माहि चारि कुंठ फिरि आवै ॥  
करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥  
नानक ते जन नामि मिलेइ ॥३॥





खिन महि नीच कीट कउ राज ॥

पारब्रह्म गरीब निवाज ॥

जा का द्रिसटि कछू न आवै ॥

तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥

जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥

ता का लेखा न गनै जगदीस ॥


जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥

घटि घटि पूरन ब्रह्म प्रगास ॥


अपनी बणत आपि बनाई ॥

नानक जीवै देखि बडाई ॥४॥







इस का बलु नाही इसु हाथ ॥  
करन करावन सरब को नाथ ॥  
आगिआकारी बपुरा जीउ ॥  
जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥  
कबहू ऊच नीच महि बसै ॥  
कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥  
कबहू निंद चिंद बिउहार ॥  
कबहू ऊभ अकास पइआल ॥  
कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥  
नानक आपि मिलावणहार ॥५॥







कबहू निरति करै बहु भाति ॥  
कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥  
कबहू महा क्रोध बिकराल ॥  
कबहू सरब की होत रवाल ॥  
कबहू होइ बहै बड राजा ॥  
कबहु भेखारी नीच का साजा ॥  
कबहू अपकीरति महि आवै ॥  
कबहू भला भला कहावै ॥  
जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥  
गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥६॥





कबहू होइ पंडितु करे बख्यानु ॥

कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥

कबहू तट तीरथ इसनान ॥

कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥

कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥

अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥

नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥


जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥

जो तिसु भावै सोई होइ ॥

नानक दूजा अवरु न कोइ ॥७॥







कबहू साधसंगति इहु पावै ॥  
उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥  
अंतरि होइ गिआन परगासु ॥  
उसु असथान का नही बिनासु ॥  
मन तन नामि रते इक रंगि ॥  
सदा बसहि पारब्रह्म कै संगि ॥  
जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥  
तिउ जोती संगि जोति समाना ॥  
मिटि गए गवन पाए बिस्त्राम ॥  
नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥८॥११॥

